

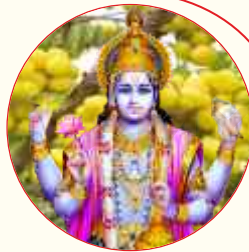
इस मास में विशेष: साधना दीक्षा



व्यापार कार्य वृद्धि लाभ पंचमी साधना

लाभ पंचमी - 14 नवम्बर

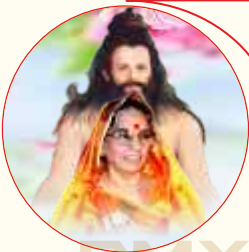
लाभ प्राप्त करने के क्षण जीवन में बहुत कम बार आते हैं और जब आयें और व्यक्ति इन महत्वपूर्ण क्षणों को पकड़ ले तो अपने जीवन की दिशा को ही बदल सकता है, क्योंकि जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप दुर्भाग्य है, और जब तक यह दुर्भाग्य रहता है, व्यक्ति का जीवन बड़ा ही कष्टकारक हो जाता है। इस चैतन्य दिवस पर साधना सम्पन्न कर साधक कार्य, व्यापार, रोजगार में वृद्धि, धन, ज्ञान, सौभाग्य, लाभ से युक्त हो सकेंगे।



सद्गुरु स्वरूप अक्षय सम्पन्नता स्थापन साधना

अक्षय नवमी - 18 नवम्बर

शिष्य जब समर्पण भाव में आ जाता है और वह गुरु के साथ एकाकार होने के लिये मन मस्तिष्क और हृदय से दृढ़ हो जाता है, तो गुरु शिष्य में आत्म लीन होकर उसमें अपना सम्पूर्ण प्यार उड़ेल देते हैं। प्रस्तुत साधना विश्वामित्र प्रणीत राजा दशरथ को दी थी, जिससे साधक विश्वामित्र युक्त ब्रह्मास्मि शक्ति को प्राप्त करें। एकलव्य ने भी साधना के द्वारा ही गुरु द्रोण की सूक्ष्म उपस्थिति को साकार किया था, आवश्यकता है तो मात्र साधना को पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास से सम्पन्न करने की।



भगवती शक्तिमय गुरु साधना

सद्गुरु संन्यस्थ सिद्धि दिवस - 24 नवम्बर

शिष्य के जीवन में एक मात्र गुरु ही होते हैं। गुरु साधना में एक स्थिति ऐसी होती है, जब शिष्य की दृष्टि में गुरु ही सर्वदेवमय स्वरूप हो जाते हैं और इससे भी ऊपर शिष्य के लिये इष्ट और गुरु में विभेद समाप्त हो जाता है। इस साधना से साधक के अन्दर जिस गुरुत्व शक्ति के बीज का स्थापन होता है, वही साधक को जीवन पर्यन्त गतिशील भी करता है। एक ओर करुणा, स्नेह, प्रेम, मातृत्व भावों का विकास होता है, वहीं व्यक्तित्व में एक प्रखरता और प्रचण्डता भी आ जाती है। एक ऐसा तेज व्याप्त होता है, जिससे उसकी आन्तरिक और बाहरी दोनों शक्तियों में प्रवाह का भाव व्याप्त होता है।



काल चक्र मुक्ति भैरव साधना

काल भैरव जयन्ती - 01 दिसम्बर

काल भैरव का अर्थ है, जो काल चक्र में पड़े हुये साधक को अपनी चैतन्यता से मुक्त कर श्रेष्ठता की ओर अग्रसित करें। भगवान शिव की ही भांति भैरव अत्यंत शीघ्रता से प्रसन्न होते हैं। काल भैरव भाव के अधीन आने वाले देवत्व हैं। भैरव साधना का एक गोपनीय पक्ष यह भी है, कि जहां वे एक उग्र देव हैं वहीं अंतर्मन से पूर्ण शांत व चैतन्य देव भी हैं, जिनकी यथेष्ट रूप में उचित साधना विधि से उपासना करने पर यह संभव ही नहीं है कि साधक के जीवन में किसी प्रकार का भौतिक अभाव रह जाये।

साधना एक साधक के जीवन का अभिन्न अंग है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव सद्गुरुदेव के हृदय में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करते हैं। ये विशिष्ट साधनायें सम्पन्न करने के लिए कैलाश सिद्धाश्रम में सम्पर्क करें।